Bharat me Banking ka mahatva

भारत में बैंकिंग का महत्व

Dr. Vijay Prakash Mishra
डा0 विजय प्रकाश मिश्रा
अस्सिटेंट प्रोफेसर
व्यवहारिक अर्थशास्त्र विभाग
जे0एन0पी0जी0 कालेज
लखनऊ

शोध सारांशः आधुनिक समय में किसी भी देश का विकास उद्योगों के विकास पर निर्भर करता है और उद्योगों के कुशल संचालन के लिए धन की आवश्यकता होती है और देश के उद्योगो को धन बैंको द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। अर्थात बैंक अर्थव्यवस्था के केन्द्र बिन्दु संचालक एवं नियन्त्रक के रूप में कार्य करते है और देश का उत्पादन उद्योग तथा व्यवसाय बैंकिंग व्यवस्था पर आधारित होते हैं, बैंक ही व्यापार, वाणिज्य व व्यवसाय का **''धमनी केन्द्र''** है। आर्थिक व औद्योगिक विकास की योजनाओं की सफलता के लिए बैंक विकास के लिए पर्याप्त धन देता है।

प्रस्तावनाः वर्तमान समय में आधुनिक बैंको के कार्यों के देखने से स्पष्ट हो जाता है, कि हमारे सामाजिक व आर्थिक जीवन में बैंकों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, चूँकि वर्तमान व्यापारिक प्रणाली और हमारा आर्थिक जीवन एक सक्रिय और सुदृढ बैंकिंग व्यवस्था के अभाव में सुचारू रूप से नही चल सकता, प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री बिकसेल के अनुसार ''बैंक आधुनिक चलन व्यवस्था का हृदय तथा केन्द्र बिन्दु है'', आर्थिक विकास के साथ–2 बैंको के कार्य तथा महत्व में निरन्तर वृद्धि होती गयी है, और अब तो कोई भी अर्थव्यवस्था बैंको के अभाव में विकास की कल्पना भी नही कर सकते है। बैंकों के महत्व सम्बन्धी बातों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है–

- **बचत का संग्रह करके उत्पादन कार्यो में लगानाः**–बैक समाज के उन वर्गों तथा व्यक्तियो का धन जमा करते है, जिनके लिए वह अनावश्यक तथा कम उपयोगी होता है, और चूंकि यह धन बैंको में सुरक्षित होता है, और इस पर बैंक ब्याज भी देता है इसलिए बचत की भावना को प्रोत्साहन मिलता है, इस जमा धन को बैंक उन व्यक्तियों को उधार देता है जो इसका प्रयोग उत्पादन कार्यो में कर सकते है, इस प्रकार बैंक एक तरफ समाज की बचत को क्रियाशील करते है, तथा दूसरी ओर विनियोग को प्रोत्साहन देते है। जिससे समाज में पूँजी निर्माण को बल मिलता है, तथा उत्पादन व राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

- **लोचदार मुद्रा प्रणालीः**—व्यापार तथा उद्योग की मुद्रा सम्बन्धी आवश्यकताओं में परिवर्तन होते रहते हैं, बैक द्वारा इस समस्या को साख मुद्रा का प्रसार या संकुचन करके दूर कर देते हैं। इससे मुद्रा व्यवस्था निरन्तर लोचपूर्ण बनी रही है।
- **साख सृजनः**—आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए साख भारत बहुत ही महत्पूर्ण है क्योंकि अधिकांश व्यापारिक कार्य साख द्वारा ही सम्पन्न होते हैं क्योंकि बैंक जनता से जो जमाये ब्याज व सुरक्षा की आकर्षण देकर प्राप्त करते है, और इन कोषों को ऋण व अग्रिम के रूप में उधार देकर साख सृजन करते है।
- **साख नियन्त्रणः**—एक तरफ जहां साख का सृजन व्यापारिक बैंको द्वारा किया जाता है वही साख का नियन्त्रण देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा किया जाता है, साख की मांग तथा पूर्ति में सन्तुलन होना अत्यन्त आवश्वयक है अन्यथा मुद्रा के मूल्यों में परिवर्तन (मुदा स्फीति, विस्फीति, संकुचन आदि) का देश की अर्थ व्यवस्था पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है।
- **मुद्रा प्रणाली का संचालनः**—किसी भी देश में मुद्रा का निर्गमन तथा नियन्त्रण देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा किया जाता है।
- **आर्थिक विकास में योगदानः**—बैंक देश के आर्थिक विकास में अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं, जैसे—(1) पूँजी निर्माण की गति बढाकर (2) व्यापरिक बैंको द्वारा समय—समय पर आर्थिक अध्ययन करके महत्वपूर्ण सूचनाये, आंकडे प्रकाशित करते है, जिनसे आर्थिक समस्याओं का विवेचन किया जाता है तथा अन्य उपयोगी सामग्री का समावेश किया जाता है।
- **विभिन्न उपयोगी सेवाये ग्राहको को प्रदान करनाः**—बैंक द्वारा अपने ग्राहको को समय—सयम पर अनेक उपयोगी सेवाये उपलब्ध कराते है जो कि निम्नवत हैः—

❖ धन हस्तान्तरण की सुविधा (एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए),

❖ ग्राहको के लिए चेक, बिल आदि संग्रहण,

❖ ग्राहको ,ज्ञरा लिखे गये चेक, देय बिल का आदि का भुगतान,

❖ निम्न व्यय पर बहुमूल्य वस्तुओं तथा दस्तावेज व प्रपत्रों को सुरक्षित रखने की सुविधा प्रदान करता है। जिससे ग्राहकों में सुरक्षा भावना उत्पन्न हो,

❖ सम्पत्ति के ट्रस्टी व प्रबन्धक के रूप में कार्य करना,

❖ ग्राहकों के स्थाई निर्देशों के अनुसार भुगतान करना,

❖ ग्राहको को वित्तीय सलाह प्रदान करना,

❖ ग्राहकों को उपभोक्ता साख, यात्री चेक व अन्य साख (विदेशी विनिमय) उपलब्ध कराना,

- **सामाजिक प्रतिबद्धता व जनोन्मुखी बैंकिंगः**—वर्तमान समय में बैंकिंग नीतिया व कार्यक्रम देश की आर्थिक व सामाजिक प्राथमिकताओं के अनुसार ही तैयार की जाती हैं।

प्राथमिक क्षेत्र में प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, दुर्घटना बीमा योजना, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में सहयोग व कृषि तथा उद्योग को ऋण आदि योजनाओं ने जन जन में बैंको को लोकप्रिय बना दिया है।

- **विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं (बैंको) की स्थापनाः**—किसी भी देश के विकास कार्यों को बढ़ाने में बैंको व वित्तीय संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है, कृषि, व्यापार, वाणिज्य उद्योग आदि के वित्त की सुचारू रूप से व्यवस्था करने के लिए सरकार ने अनेक विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं (बैंको) की स्थापना की है। जैसे—नाबार्ड, भूमि विकास बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, आई0डी0बी0आई0, औद्योगिक पुनर्निर्माण बैंक, एक्जिम बैंक आदि यह वित्तीय संस्थाएं अग्रिम बैंक योजना कार्यक्रमों के द्वारा विकास कार्यक्रमों की अगुवाई कर रहें हैं।
- **सरकार को सहायताः**—बैंक द्वारा सरकार को भी अनेको सहायताएं प्रदान की जाती हैं। जैसे सरकारी बैंकर के रूप में कार्य करना, सरकारी ऋणों व प्रतिभूतियों का क्रय—विक्रय करना, सरकारी भुगतान करना, करो की वसूली, संकट काल में सरकार के चंदे एकत्र करना, सरकारी प्रतिभूतियों में विनियोग करके भी यह बैंक सरकार की सहायता करते हैं।
- **निष्कर्षः**—उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है बैंक समाज की बचतों को एकत्र करके उन्हें उत्पादक कार्यों में विनियोजित करते हैं, व्यापार तथा औद्योगिक कार्यों के लिए यथोचित मात्रा में पूँजी उपलब्ध कराते हैं, आर्थिक नियोजन के लिए धन उपलब्ध कराकर देश के आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान देते हैं। वास्तव में आधुनिक समय में बैंक समाज के सम्पूर्ण आर्थिक विकास की आधारशिला तथा आर्थिक प्रगति के एक अनिवार्य आवश्यकता बन गये हैं। आधुनिक युग में बैंको के बिना समाज की कल्पना ही अव्यवहारिक एवं असहनीय है। विक्सेल के अनुसार (बैंक आधुनिक चलन व्यवस्था का हृदय और केन्द्र बिन्दु हैं)।

- ✓ **सन्दर्भः**—मुद्रा बैंकिंग व राजस्व —वी0सी0 सिन्हा, 148—153
- ✓ **मुद्रा एवं बैंकिंग**—जी0सी0 सिंघई, 215—226
- ✓ **मुद्रा बैंकिंग व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारः**—टी0टी0 सेठी, 164—182
- ✓ **मुद्रा बैंकिंग व विनिमयः**—जे0पी0 मिश्रा, 116—126